पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. ... (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित:01.03.2020 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्‌घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक...

Join—http://www.facebook.com/groups/a...

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, ...44

वर्ष-36 अंक-19 फाल्गुन-2076 दयानन्दाब्द 197 01 मार्च से 15 मार्च 2020 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.03.2020, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

युवा उद्‌घोष की अपील

यदि राष्ट्र रहेगा तो हम सब रहेंगे, हिंसा व सार्वजनिक सम्पतियों को क्षति पंहुचाना किसी समस्या का हल नहीं है, आईये, आपसी सदभावना, प्रेम, शान्ति को बनाये रखें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में

वीर भरत की जन्म स्थली, मालती नदी के तट पर, हिमालय की सुन्दर पहाड़ियों की तलहटी में

योगीराज ब्रह्म. विश्वपाल जयंत के सान्निध्य व शिक्षाविद् डॉ. अशोक कु. चौहान की अध्यक्षता में

विशाल आर्य युवक निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

"योग साधना शिविर"

दिनांक 6 जून 2020 (शनिवार) से रविवार, 14 जून 2020 तक

स्थान:

गुरूकुल कण्वाश्रम, डाक. कलालघाटी, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

शिविर उद्‌घाटन समारोह:

शनिवार, 6 जून, प्रातः 11 से 1.00 बजे तक एवं

श्री गोविन्द सिंह भण्डारी के कर कमलों द्वारा

भव्य समापन समारोह:

रविवार, 14 जून, प्रातः 10 बजे से 1.00 बजे तक

पंहुचने का मार्गः दिनांक 5 जून को रात्री 9 बजे दिल्ली से कोटद्वार की रेल द्वारा या डी.टीसी.,रोड़वेज द्वारा प्रातःकाल आर्य समाज,कोटद्वार पंहुचे वहां से आटो/ग्रमीण सेवा द्वारा लगभग 10 कि.मी. दूर स्थित गुरूकुल पंहुचे। इच्छुक सम्पर्क करें–प्रवीन आर्य–9911404423, धर्मपाल आर्य–9871581398, सौरभ गुप्ता–9971467978, अरूण आर्य–9818530543, युवको हेतु प्रवेश शुल्क 250/– रूपये व योग साधकों हेतु प्रवेश शुल्क 500/– रूपये रहेगा।

हरिद्वार, ऋषिकेश, कण्वाश्रम भ्रमण यात्राः–

शुक्रवार, 12 जून रात्री दिल्ली से स्पेशल बसें चलेगी जो कि प्रातः हरिद्वार,ऋषिकेश होते हुए शनिवार, 13 जून को गुरूकुल कण्वाश्रम शाम 5 पंहुचेगी तत्पश्चात गुरूकुल में रात्री विश्राम और रविवार, 14 जून को शिविर समापन के बाद दोपहर 2 बजे दिल्ली के लिये वापिस प्रस्थान करेगी ओर रात्री 10 बजे तक दिल्ली पहुंच जाएगी। प्रति सीट–700/– रहेगी। आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

निवेदकः

आनन्द चौहान, संरक्षक अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामन्त्री

रक्तसाक्षी पंडित लेखराम के बलिदान से प्रेरणा लेकर उनका अनुकरण करना कृतज्ञता एवं श्रद्धांजलि है

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वर्ष 1897 की 6 मार्च को पं. लेखराम जी का 123 वां बलिदान दिवस होने के कारण उनके जीवन पर विचार कर उनसे प्रेरणा ग्रहण करने का अवसर है। पं. लेखराम जी का आरम्भिक जीवन साधारण मनुष्यों की भांति ही था परन्तु ऋषि दयानन्द वा वेदों के विचारों के स्पर्श व उन पर उनकी अद्भुत श्रद्धा व भक्ति सहित उसके लिए अपने प्राणों को अर्पित कर देने के कारण आज वह वैदिक धर्म पर शहीद हुए बलिदानियों में शिखरस्थ स्थान पर हैं। बलिदान दिस पर उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करने पर विचार करने का दिन है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य मात्र अर्थ प्राप्ति करना तथा उससे सुख–भोग की सामग्री एकत्रित करना ही नहीं है अपितु संसार के उत्पत्तिकर्ता ईश्वर व एकदेशीय सूक्ष्म एवं चेतन जीवात्मा के सत्यस्वरूपों को जानकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हुए शुभ गुणों को धारण की आत्मा का कल्याण करना है। इसके साथ ही ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष की प्राप्ति करना भी मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। पण्डित लेखराम जी के जीवन काल में विधर्मी मिथ्या ज्ञान व अविद्या के सहारे वैदिक धर्म का ह्रास कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत कर उसके महत्व को प्रस्तुत किया था जो इस जन्म में अभ्युदय प्राप्त कराने के साथ मृत्यु होने पर निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष कराता है। पं. लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं, सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रचार को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया था और अपनी योग्यता व पुरुषार्थ से वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण सेवा व रक्षा की। सारा आर्य जगत् व सभी वैदिक धर्मी उनकी सेवाओं एवं बलिदान के लिए सदा–सदा के लिए ऋणी व कृतज्ञ हैं। उनके बलिदान ने यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक धर्म के विरोधियों के पास वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों की काट व उनका उत्तर नहीं है। उनकी नींव असत्य व मिथ्या ज्ञान अथवा अविद्या पर आधारित है। वह वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का न तो सामना ही कर सकते हैं और न आक्षेपों का उत्तर ही दे सकते हैं। पं. लेखराम जी के बलिदान ने विपक्षियों व विरोधियों की सैद्धान्तिक दृष्टि से पराजय प्रदर्शित की है। हमें पं. लेखराम जी से प्रेरणा लेकर ऋषि दयानन्द व उनके मार्ग पर चलना है। इसी से वैदिक धर्म का प्रसार होगा और हम पुण्य के भागी होंगे।

पंडित लेखराम जी सच्चे ब्राह्मण, धर्मवीर वा धर्मजिज्ञासु थे। आपका सारा जीवन सभी एषणाओं से मुक्त जीवन था। धन व भौतिक पदार्थों का आपको किंचित भी मोह नहीं था। अर्थ शुचिता का यदि आदर्श रूप देखना हो तो वह महर्षि दयानन्द, पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी व पं. गुरुदत्त आदि के जीवन में मिलता है। पं. लेखराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचारक विद्वान थे। पंजाब सभा व स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से ही आपने ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित का अनुसंधान किया। इसके लिए वह उन सभी स्थानों पर गये जहां जहां ऋषि दयानन्द जी गये थे। वहां जाकर लेखराम जी ने उन व्यक्तियों की तलाश की, जो ऋषि दयानन्द के जीवन में उनसे मिले थे, उन्हें देखा था तथा उनके सम्पर्क में आये थे या उनके प्रवचनों आदि से लाभान्वित हुए थे। ऐसे व्यक्तियों का पता लगाकर आपने उनसे ऋषि के बारे में जानकारी संग्रहीत की थी। ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये लोगों के संस्मरणों को पता कर उनके ही शब्दों में उन्हें लिपिबद्ध करके ऋषि का अपूर्व जीवनचरित तैयार किया था। यद्यपि आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द के पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, श्री गोपालराव हरि, श्री रामविलास शारदा, श्री हरविलास शारदा, मास्टर लक्ष्मण आर्य और डा. भवानीलाल भारतीय आदि विद्वानों के महत्वपूर्ण जीवनचरित विद्यमान हैं परन्तु पं. लेखराम जी ने जो तथ्यात्मक जीवनचरित दिया है वही सामग्री परवर्ती विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवनचरित का मुख्य आधार बनी है। लेखराम जी के इस कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है। इसे पढ़कर पाठकों को सन्तोष व प्रसन्नता का अनुभव होता है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि पं. लेखराम जी द्वारा यह कार्य सम्पन्न न किया जाता तो आज ऋषि के जितने जीवन चरित उपलब्ध होते हैं, घटनाओं की दृष्टि से उन सबका आकार अत्यन्त संक्षिप्त व न्यून होता। इस कार्य के लिए भी सारा आर्यजगत पं. लेखराम जी का ऋणी है। न केवल यह एक ग्रन्थ ही, अपितु पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के पोषक अनेक ग्रन्थों का सृजन किया है। 'कुलियात आर्य मुसाफिर' ग्रन्थ में उनकी प्रायः सभी रचनाओं को संग्रहित किया गया है। वर्तमान में भी यह ग्रन्थ परोपकारिणी सभा से उपलब्ध है।

पं. लेखराम ने देश के अनेक स्थानों पर जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। उन्होंने आर्यसमाजों की स्थापना, विधिर्मियों के आर्यों के धर्मान्तरण से रक्षा तथा अनेक धर्मान्तरित बन्धुओं को वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया। उन्होंने जिस समर्पण भाव से शुद्धि व धर्मप्रचार का कार्य किया वह स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। उन्होंने वेद विरोधी मुस्लिम विद्वानों को जो चुनौतियां दीं वही उनकी हत्या व बलिदान का कारण बनीं। इस कार्य को करते हुए उन्होंने कभी अपनी माता, धर्मपत्नी व 1 वर्ष 3 माह की अल्पायु में मृत्यु को प्राप्त पुत्र 'सुखदेव' के प्रति मोह का परिचय नहीं दिया। आप आचरण बताता है कि पंडित जी पारिवारिक मोह से ऊपर उठे हुए थे। आपकी धर्मपत्नी माता लक्ष्मी देवी जी भी आप की ही तरह वैदिक घर्म प्रेमी व ऋषिभक्त थी। आप उन्हें शिक्षित कर आर्यसमाज की प्रचारिका बनाना चाहते थे। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर माता लक्ष्मीदेवी जी को इंश्योरेंस से बीमे की राशि मिली थी। उसे उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी को पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी की शिक्षा व्यय के लिए दान दे दी थी। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी परवर्ती जीवन में स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह अद्भुद प्रतिभाशाली विद्वान थे। गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ उन्हीं के द्वारा स्थापित उनका स्मारक है। वैदिक वर्ण व्यवस्था की समर्थक उनकी कृति "कायाकल्प" एक अतीव महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमें गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था का पोषण किया गया है। पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अनेक आदर्श स्थापित किये। सभी का वर्णन यहां किया जाना शक्य नहीं हैं। हम उनके धर्म प्रेम की एक अतीव प्रेरणाप्रद घटना प्रस्तुत कर लेख को विराम देंगे।

पं. लेखराम जी को एक बार सूचना मिली कि लुधियाना के दोराहा गांव के हिन्दूओं का धर्मान्तरण किया जा रहा है। यह उनके लिए असह्य था। उन्होंने तत्काल वहां जाने की तैयारी की। मेल एक्सप्रेस रेलगाड़ी का टिकट लिया और यह निश्चय होने पर गांड़ी दोराहा रुकेगी नहीं, उन्होंने चलती रेल से कूदने का निश्चय किया। आपने अपने बिस्तर को अपने शरीर के चारों ओर लपेटकर चलती रेल से छलांग लगा दी। आपके शरीर के अनेक भागों में चोटें लगीं। आप लहुलुहान हो गये और इसी घायल अवस्था में उस स्थान पर जा पहुंचे जहां हिन्दुओं को धर्मान्तरित कर मुसलमान बनाया जाना था। जब वह वहां के लोगों से मिले तो पूछने पर उन्होंने रेलागाड़ी से कूदने की यथार्थ कथा सुनाई। यह सुनकर सभी बन्धु स्तब्ध रह गये कि कोई व्यक्ति उनके धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा कर उन तक पहुंचा है। वहां के लोग पं. लेखराम जी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने धर्मान्तरण का अपना निश्चय त्याग दिया। स्वाभाविक है कि पंडित जी ने उसके बाद उन सभी बन्धुओं को वैदिक धर्म की महत्ता पर उपदेश भी अवश्य दिया होगा और उसके साथ ही मुस्लिम मत के अनेक अन्धविश्वासों व कुरीतियों का वर्णन भी किया होगा जिससे भविष्य में कोई उनको मूर्ख न बना सके। हमें पं. लेखराम जी के जीवन की यह घटना उनके गहरे धर्मभाव का प्रमाण प्रतीत होती है।

दिनांक 6 मार्च, सन् 1897 को एक मुस्लिम युवक ने धोखे से पं. लेखराम जी के लाहौर स्थित निवास पर सायं 7 बजे छुरे को उनके पेट में घोप कर हत्या कर दी और भाग गया। जिस मनुष्य व समाज के पास किसी बात का उत्तर नहीं होता वह ऐसा ही कुकृत्य करता है। पं. लेखराम जी मरकर भी जीवित वा अमर हैं। वैदिक सत्य मत आज भी अपराजित है और अन्य सभी मत ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायियों द्वारा युक्ति, तर्क व प्रमाणों के आधार पर असत्य व अपूर्ण सिद्ध किये गये हैं। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर पं. चमूपति जी और लाला लाजपत राय जी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत करते हैं। पं. चमूपति जी के अनुसार "वीर लेखराम की अर्थी के साथ सहस्त्रों मनुष्यों का तांता लग रहा था। लाहौर के नर–नारी इस निर्भीक युवक के बलिदान पर अत्यन्त क्षुब्ध थे। पृथिवी पर हर जगह फूल ही फूल दीखते थे। गुलाब के पानी के कंटर पर कंटर बहा दिये गये। आर्यजाति में एक नई स्फूर्ति थी, नया आवेग था। प्रतीत यह होता था कि एक धर्मवीर के बलिदान ने सम्पूर्ण जाति को नया जीवन प्रदान कर दिया है। पवित्रता का पारावार था। उत्साह ठाठें मार रहा था। साहस की बाढ़ आ गई थी। जिधर देखो, कर्मण्यता–पूर्ण वैराग्य था।" लाला लाजपत राय जी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा है कि "पं. लेखराम लेखनी की तलवार लेकर कार्यक्षेत्र में आया। विरोधियों की छावनी में भगदड़ मच गई। किसमें इतना साहस था कि सामने आये? उसकी लेखनी ने वही कार्य किया जो स्वामी दर्शनानन्द की लेखनी व वाणी ने मिलकर सम्पन्न किया। कुलियाते आर्य मुसाफिर उसके अथक परिश्रम का ज्वलन्त प्रमाण है। मरने वाला मर गया। निर्दयी व क्रूर हत्यारे ने अपनी गर्दन पर निष्पाप लेखराम की हत्या का पाप लिया।" धर्मवीर पण्डित लेखराम जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग करते हुए आर्यो को यह सन्देश दिया था, "लेखनी व वाणी से प्रचार का कार्य बन्द न हो।" आज आर्यों को उनकी इस वसीयत को पूरा करना है, तभी भविष्य में वेदाज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' चरितार्थ हो सकता है। हम भी अपनी अल्प सामर्थ्य एवं योग्यता से इस कार्य में लगे हुए हैं।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोन–09412985121

महर्षि दयानन्द जन्म भूमि टंकारा में "ऋषि बोधोत्सव" सोल्लास सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का 46 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल सम्मिलित हुआ

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि को सुन्दर और भव्य बनाने का काम होगा –मुख्यमंत्री विजय रूपानी

समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल डा.देवव्रत जी व मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी की अगवानी करते श्री अनिल आर्य व श्री विजयभूषण आर्य। द्वितीय चित्र–यज्ञशाला व पण्डाल में उपस्थित श्रद्धालु आर्य जन।

टंकारा ग्राम में आयोजित शोभायात्रा में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का जत्था,नेतृत्व करते परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य,प्रवीन आर्या,डा.सुषमा आर्या,विजय हंस, विजयभूषण आर्य, प्रि.राजरानी अग्रवाल,डा.अनुराधा,डी.सी.शर्मा,देवेन्द्र गोयल,मीना आर्या,नरेश विज आदि।

इन्दौर से पधारे विद्वान अपनी पुस्तक "वैदिक विचार संग्रह" परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य को भेंट करते हुए तथा द्वितीय चित्र–आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री विजय आर्य(पंचकुला) के पुस्तक स्टाल पर साथियों के साथ।

शुक्रवार, 21 फरवरी 2020,श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर सम्बोधित करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी ने कहा कि मुझे यहां पधार कर बहुत आनन्द की प्राप्ति हुई है,टंकारा वह स्थान है जहां आर्य समाज के माध्यम से पाखण्ड निवारक वेद प्रचार संस्था मिली । उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के कान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत रहे । हैदराबाद आन्दोलन में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका की भी उन्होंने प्रंशसा की । महर्षि दयानन्द जन्मभूमि को विश्व दर्शनीय बनाने का संकल्प लिया । ट्रस्ट के सहमंत्री श्री अजय सहगल ने समारोह का संचालन किया । गुजरात के राज्यपाल डा.देवव्रत आचार्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान पुराने मूल ढांचे के अनुसार होना चाहिये जिससे वास्तविकता व श्रद्धा बनी रहे । महाशय धर्मपाल जी,योगेश मुन्जाल,सुधीर मुन्जाल,सुनील मानकटाला,सुरेशचन्द अग्रवाल,डा.विनय विद्यालंकार आदि गणमान्य व्यक्ति उपथित थे ।

शहीद दिवस पर 23 मार्च को संगीत संध्या

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू,सुखदेव के बलिदान दिवस पर एक शाम शहीदों के नाम भव्य "संगीत संध्या" का आयोजन सोमवार, 23 मार्च 2020 को सायं 5.00 बजे से रात्री 7.30 बजे तक आर्य समाज, रमेश नगर, ब्लाक–9, पश्चिमी दिल्ली में किया जा रहा है। श्री नरेन्द्र आर्य "सुमन" व प्रवीन आर्या के मधुर व ओजस्वी गीत होगे। समारोह के बाद रात्री 7.30 बजे "प्रीतिभोज" का सुन्दर प्रबन्ध रहेगा । आप सभी से अनुरोध है कि सपरिवार पंहुच कर देश के अमर बलिदानियों को श्रद्धासुमन अर्पित करें।

–अनिल आर्य, संयोजक (9810117464) व नरेश विज–स्वागताध्यक्ष

आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी व समाजसेवी शान्ता तनेजा का अभिनन्दन

रविवार, 23 फरवरी 2020,वेद प्रचार परिषद् इन्दिरापुरम के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव सोल्लास मनाया गया। चित्र में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी का अभिनन्दन करते यज्ञवीर चौहान,प्रवीन आर्य,ममता चौहान,यज्ञ ब्रहमा महेन्द्र भाई आदि । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने साथियों के साथ व्यवस्था सम्भाली । द्वितीय चित्र–आर्य महासम्मेलन में योग प्रचारक श्रीमती शांता तनेजा का अभिनन्दन करते डा.सुषमा आर्या,मनीषा ग्रोवर,प्रवीन आर्या व प्रि.अन्जु महरोत्रा ।

शिक्षाविद प्रि.अर्चना पुष्करना व प्रि.राधा भारद्वाज का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर प्रि.अर्चना पुष्करना का अभिनन्दन करते अनिल आर्य,प्रवीन आर्या,जितेन्द्र डावर,ओमप्रकाश छाबड़ा,राकेश भटनागर,अनु गुप्ता,दिनेश सिंह,सुषमा सहगल व सुरेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र–समाजसेवी राधा भारद्वाज का स्वागत करते अनिल आर्य,अर्चना पुष्करना,प्रवीन आर्या,सविता भटनागर व शान्ता तनेजा।

स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित गुरूकुल ज्वालापुर, हरिद्वार बचाओ आर्यो

रविवार, 23 फरवरी 2020,गुरूकुल बचाओ संघर्ष समिति द्वारा स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर,हरिद्वार को उतराखण्ड सरकार के मंत्री मदन कौशिक द्वारा हथियाने के मामले के लेकर हुकांर रैली का आयोजन किया गया तथा जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया गया । सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने गुरूकुल ज्वालापुर पर कब्जे का प्रयास करने वाले राज्य सरकार के मंत्री मदन कौशिक को अविलम्ब बर्खास्त करने की मांग की तथा सरकार को 10 दिन का अल्टीमेटम दिया । उन्होंने कहा कि जिनका आर्य समाज से कोई लेना देना नहीं वह घुसने का प्रयास न करें आर्य समाज इसे हरगिज बर्दाशत नहीं करेगा । योगगुरू कर्मवीर जी,स्वामी यतिश्वरानन्द विधायक,यज्ञमुनि जी,स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली),स्वामी विश्वानन्द जी,गोबिन्दसिंह भण्डारी,विरजानन्द,पूर्व सांसद प्रो.रासासिंह रावत(अजमेर),स्वामी सम्पूर्णानन्द जी,डा.आनन्द कुमार,बलवंत चौहान,स्वामी अखिलानन्द जी,स्वामी शान्तानन्द,दयाकृष्ण कंठपाल,अकिंत आर्य आदि ने अपने विचर रखे व सभी ने मदन कौशिक के कुप्रयास की निन्दा की ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवा निर्माण शिविर

रविवार, 14 जून से रविवार, 21 जून 2020 तक
आर्य समाज,जानीपुर कालोनी,जम्मू
में आयोजित किया जा रहा है।
इच्छुक सम्पर्क करें
–सुभाष बब्बर,प्रान्तीय अध्यक्ष, फोनः 9419301915 व रमेश खजुरिया, महामंत्री

गुरूकुल कण्वाश्रम बसन्तोत्सव

वीर भरत की जन्म स्थली, गुरूकुल, कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल का वार्षिक वसन्तोत्सव शनिवार, रविवार दिनांक 14,15 मार्च 2020 को आयोजित किया जा रहा है। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

–योगीराज ब्र. विश्वपाल जयन्त, कुलपति, फोनः 9837162511

अलीगढ़ में आर्य युवा शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जिला अलीगढ़ के तत्वावधान में "विशाल आर्य युवा निर्माण शिविर" दिनांक, 13 मई से रविवार, 17 मई 2020 तक टयूबल ग्राउण्ड,बहरावत,अलीगढ़ में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक सम्पर्क करें– कमल आर्य, संयोजक व रूपेन्द्र आर्य, सहसंयोजक

हापुड़ में आर्य कन्या शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उ.प्र. के तत्वावधान में "विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर" मंगलवार, 26 मई से रविवार, 31 मई 2020 तक आर्य समाज,हापुड़ में आयोजित किया जा रहा है।

इच्छुक सम्पर्क करें–आनन्दप्रकाश आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष, फोनः 9837086799 व नरेन्द्र आर्य,स्वागताध्यक्ष

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री रामगोपाल भटनागर (पूर्व प्रधान, आर्य समाज,नारायणा) का निधन।
2. श्री भीमसेन चौधरी (भ्राता विजय चौधरी) का निधन।
3. श्रीमती इन्दु वधवा (आर्य समाज,वेशी, मुम्बई) का निधन ।
4. वैदिक विद्वान पं.सुधाकर चतुर्वेदी(बगंलोर) का निधन ।
5. वैदिक विदुषी श्रीमती सरोज वर्मा(जयपुर) का निधन ।
6. श्रीमती राजरानी(धर्मपत्नि दीनानाथ नागिया) का निधन ।
7. आचार्य प्रकाशानन्द जी(आर्य समाज जमशेदपुर) का निधन ।
8. श्री सुशील महाजन(आर्य समाज,हनुमान रोड़) का निधन ।
9. श्री कुलभूषण कुमार (पूर्व प्रधान, आर्य समाज, विकासपुरी) का निधन ।
10. श्रीमती सुमित्रा देवी (आर्य समाज मॉडल टाऊन, हिसार) का निधन।

सम्पादकः अनिल कुमार आर्य द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए मंयक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, प्रबन्धक : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970